सार संक्षेप एवं निष्कर्ष

सार संक्षेप एवं निष्कर्ष

प्रस्तावना :

वर्तमान समय में आमवात रोग चिकित्सकों के सामने एक चुनौती के रुप में है कारण यह है कि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में इस रोग का सम्यक् उपचार नहीं है एवं इस व्याधि से ग्रसित रोगियों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि भी हो रही है, इस व्याधि में आयुर्वेदीय चिकित्सा कारगर है।

आमवात व्याधि का स्वतंत्र रुप से वर्णन चरक, सुश्रुतादि ग्रंथों मे उपलब्ध नहीं है। लेकिन सामवात का वर्णन बृहत्रयी में मिलता है। आमवात व्याधि का वर्णन विशेषतः लघुत्रयी में मिलता है। आमवात व्याधि के बारे में पूर्णतः स्पष्ट ज्ञान 'माधवनिदान' में प्राप्त होता है। यह व्याधि आयुर्वेद शास्त्र के मतानुसार बाल्यावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था के अंत तक पायी जाती है। आधुनिक शास्त्र के मतानुसार २0 वर्ष से ५0 वर्ष की आयु में अधिकतर पायी जाती है। विश्व में इस व्याधि से ४0 प्रतिशत लोग पीड़ित है। जिसमें युवा पीढ़ी अधिकतर पीड़ित है।

जिस व्याधि में आम से युक्त वातदोष विविध संधियों में विकृति उत्पन्न कर देता है, ऐसी व्याधि को 'आमवात' नाम से जाना जाता है। इस व्याधि में आम तथा वात प्रकुपित होकर कोष्ठ, त्रिक्प्रदेश, जानु आदि संधियों में प्रविष्ठ होकर सारे शरीर को जकड़ देता है। यह अत्यंत पीड़ाकर एवं मध्यम मार्ग में आश्रित व्याधि है।

आमेन सहितं वात आमवात' एवं ***'आमश्च वातश्च आमवात'*** ऐसी आमवात शब्द की व्युत्पत्ति मानी गयी है। आमवात शब्द आम और वात इन दो शब्दों से बना हुआ है। आम और वात कटि, त्रिक्, जानु, गुल्फ आदि संधियों में प्रवेश करके संबंधित स्थानों पर शोथ, शूल, स्तब्धता आदि उत्पन्न कर आमवात की उत्पत्ति करते है। विशेषतः बड़ी संधियों में होने वाले सशूल एवं सज्वर शोथ को आमवात कहते है। यह मध्यम मार्ग में होने वाला कृच्छ्रसाध्य व्याधि है। व्याधि विरुध्द आहार विहार करने वाले मंदाग्नि व निश्चेष्ट मनुष्य का आमरस वायु से प्रेरित होकर श्लेष्मा के मुख्यस्थान आमाशय, संधि, हृदय इत्यादि में जाकर वहाँ स्थित समान गुणधर्मी कफ से मिलकर और भी विकृत एवं विद्ग्ध हो जाता है, धमनियों में पहुॅच कर त्रिदोष प्रकोप से प्रभावित होकर शरीर के

स्त्रोतों में क्लेद उत्पन्न करता हैं। जिससे दुर्बलता, हृदय में भारीपन, अंगों में पीड़ा, शोथ, अरुचि, आलस्य होता हैं। वात और कफ एक साथ प्रकुपित होकर कोष्ठ, त्रिकप्रदेश व संधियों में प्रविष्ट होकर समस्त शरीर को जकड़ लेता है तथा वृश्चिक दंशवत वेदना से मानव को व्यथित कर देता हैं।

आमवात व्याधि को आधुनिक वैद्यक शास्त्र में Rheumatoid Arthritis कहते हैं। इस व्याधि से लगभग ४0% लोग पीड़ित हैं। आधुनिक चिकित्सा शास्त्र के विकासोन्मुख प्रगति ने इसकी चिकित्सा के अनेक योग उत्पन्न किये हैं तथापि संपूर्ण लाभ के लिए वे वैज्ञानिक आज भी सफल नहीं हुए।

युगपत्कुपितावन्तस्त्रिकसन्धिप्रवेशकौ।
स्तब्धं च कुरुतो गात्रमामवातः स उच्यते।। मा.नि. 25।5

आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार आमवात की संप्राप्ति में अग्निमांद्य आमरस और वात की प्रधानता होती हैं। आमवात व्याधि के चिकित्सा सूत्र में बस्ति का उल्लेख मिलता हैं।

लंघनं स्वेदनं तिक्तं दीपनानि कटूनि च।
विरेचनं स्नेहपानं बस्तश्चाममारुते।।
सैन्धवाद्येनानुवास्य क्षारवस्तिः प्रशस्यते।। चक्रदत्त 25।1

आमवात व्याधि के चिकित्सा में सर्वप्रथम लंघन, स्वेदन, तिक्त पदार्थ, अग्निदीपन पदार्थ और कटु पदार्थ का सेवन करना, विरेचन, स्नेहपान तथा 'बस्तिकर्म' प्रशस्त माना है। आमवात व्याधि में शोधन एवं क्षार बस्ति का प्रयोग प्रशस्त माना गया है। सैन्धवादि तैल द्वारा अनुवासन एवं क्षारवस्ति देना चाहिये।

इसी सिद्धांत को ध्यान में रखते हुये आमवात के रोगियों में वृहत सैन्धवादि तैल की बाहयवस्ति (जानुवस्ति) एवं क्षारवस्ति का चिकित्सीय अध्ययन किया गया है।

शोध प्रबंध के अध्याय –

अध्याय 1 – सैद्धान्तिक अनुशीलन – इस अध्याय के अंतर्गत आमवात व्याधि का ऐतिहासिक, आयुर्वेद संहिताओं में वर्णित निदान, पूर्वरुप, रुप, संप्राप्ति, प्रकार, दोष–दूष्य सम्मूर्च्छना, चिकित्सा एवं पथ्यापथ्य का सैद्धान्तिक अध्ययन किया गया है। साथ ही आधुनिक शास्त्र में वर्णित Rheumatoid Arthritis का विवेचन किया गया है।

अध्याय 2 – औषधि द्रव्य विवेचन – चक्रदत्त के आमवात प्रकरण में वर्णित वृहत सैन्धवादि तैल एवं क्षारवस्ति में प्रयुक्त औषधि द्रव्यों के रस, गुण, वीर्य, प्रभाव, रासायनिक संघटन, उपयुक्त अंग, कार्मुक्ता आदि का विस्तार पूर्वक विवेचन किया गया है।

अध्याय 3 –पर्यवेक्षण एवं चिकित्सात्मक अध्ययन – चिकित्सापरक अध्ययन हेतु विशेष शोध पद्धति, रोगी चयन, रोगी संख्या, समूह वर्गीकरण, व्याधि विनिश्चय, रोगी परीक्षण, औषधि चयन का आधार, औषधि योजना, चिकित्सकीय प्रभाव का आंकलन, चिकित्सा के सम्पूर्ण प्रभाव का अध्ययन तथा प्राप्त परिणामों का सांख्यिकी विश्लेषण किया गया।

अध्याय 4 – विमर्श – इस अध्याय के अंतर्गत चिकित्सकीय अध्ययन में प्राप्त परिणाम तथा वृहत सैन्धवादि तैल की जानुवस्ति एवं क्षारवस्ति का आमवात के रोगियों में चिकित्सकीय प्रभाव का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया।

अध्याय 5 – सार संक्षेप एवं निष्कर्ष – इस अध्याय के अंतर्गत सम्पूर्ण शोध पद्धति का संक्षिप्त विवेचन तथा अन्तिम निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया।

उद्देश्य :

आमवात व्याधि जिसे आजकल Rheumatoid Arthritis के समकक्ष माना जाता है। आयुर्वेद में इस व्याधि का वर्णन लघुत्रयी में मिलता हैं। आधुनिक वैद्यक शास्त्र के विकासविनमुख आज तक आमवात व्याधि पर पूर्णतः नियंत्रण करने वाली दुष्परिणाम रहित औषधियों का अभाव ही हैं। जो भी औषधि उपलब्ध है, उनकी दुष्परिणाम का प्रभाव महाभयंकर होने से उपयोगिता में सीमितता आयी हैं। प्रत्येक शास्त्र में संशमन औषधियों से चिकित्सा करके केवल लाक्षणिक लाभ पर ही संतोष कर लिया जाता है। परंतु यदि शरीर के प्रकुपित दोषों को संशोधन व्दारा समावस्था में लाया जाय तो क्रियाओं का प्रभाव, प्रभावी और दूरगामी होता है। संशोधन चिकित्सा पंचकर्म द्वारा की जाती है, उसीमें बस्ति–कर्म एक प्रधान चिकित्सा है।

उपरोक्त उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए चक्रदत्त में उद्धरित वृहत सैन्धवादि तैल एवं क्षारवस्ति का प्रयोग आमवात के रोगियों में चिकित्सार्थ प्रयोग करने का निश्चय कर इसका चयन किया गया। शास्त्रोक्त क्षारवस्ति का विधिवत वैज्ञानिक प्रयोग करके वर्तमान युग में प्रचलित मापदण्ड के आधार पर उपरोक्त वस्ति का प्रभाव सिद्ध करना इस शोध प्रबंध का लक्ष्य एवं उद्देश्य है।

निदानपंचक के दृष्टिकोण से आमवात व्याधि को उत्पन्न करने वाले कारणों का अध्ययन कर कौन से आहारजन्य, विहारजन्य एवं काल के परिणामस्वरुप इस व्याधि की निर्मिती होती है, इसका समाज के प्रत्येक वर्ग को ज्ञान करा देना भी इस अध्ययन का एक उद्देश्य है।

इस विषय पर अद्यापि किसी संशोधक ने तुलनात्मक प्रयोगाध्ययन किया हुआ प्राप्त नहीं होता। अतः 'आमवात (Rheumatoid Arthritis) में वृहत सैन्धवादि तैल की जानुवस्ति एवं क्षारवस्ति का चिकित्सकीय अध्ययन' कर इसका परिणाम देखने से कुछ अंश में यह रिक्तता पूर्ण होगी यह विचार कर इस विषय का चयन किया गया।

औषधि द्रव्य विवेचन - आमवात के रोगियों पर वृहत सैन्धवादि तैल की जानुवस्ति एवं क्षारवस्ति का चिकित्सकीय अध्ययन हेतु चक्रदत्त के आमवात चिकित्सा सूत्र का आधार मानकर वृहत सैन्धवादि तैल एवं क्षारवस्ति का चयन किया है।

वृहत सैन्धवादि तैल – *सैन्धवं त्रिफला रास्ना पिप्पली गजपिप्पली।*
सर्जिका मरिचं कुष्ठं शुण्ठी सौवर्चलं बिडम्।।
यमान्यौ पुष्करराजाजी मधुकं शतपुष्पिका।
पलार्द्धिकैः पचेदेतैः प्रस्थमेरण्ड तेलतः।
प्रस्थाम्बु शतपुष्पायाः प्रत्येकं मुस्तकाजिजके।।
दद्याद् द्विगुणते पानवस्त्यभ्यंग प्रयोजितम्।। चक्रदत्त 25।45–47

कल्क द्रव्य – सैन्धव लवण, त्रिफला, रास्ना, पिप्पली, गजपिप्पली, सर्जिका क्षार, मरिच, कुष्ठ, शुण्ठी, सौर्वचल, विड, अजमोदा, यवानी, पुष्करमूल, अजाजी, मधुक, शतपुष्पा
मात्रा – ½ पल प्रत्येक द्रव्य

क्वाथ द्रव्य – शतपुष्पा क्वाथ (मात्रा – 1 प्रस्थ)

तैल – एरण्ड तैल (मात्रा – 1 प्रस्थ)

द्रव – मस्तु एवं कांजी (मात्रा – 2 प्रस्थ प्रत्येक द्रव)

वृहत सैन्धवादि तैल का प्रयोग पान, वस्ति एवं अभ्यंग के रुप में वर्णित है।

द्रव्य	रस	गुण	वीर्य	विपाक	दोषघ्नता
सैन्धव	लवण	स्निग्ध, लघु, सूक्ष्म	उष्ण	कटु	वातहर, ना–अतिपित्तलम्
आमलकी	पंचरस अम्ल प्रधान	गुरु,रुक्ष, शीत	शीत	मधुर	त्रिदोषहर

हरितकी	पंचरस कषाय प्रधान	लघु, स्निग्ध	उष्ण	मधुर	त्रिदोषहर
विभितकी	कषाय	रुक्ष, लघु	उष्ण	मधुर	त्रिदोषहर
रास्ना	तिक्त	गुरु	उष्ण	कटु	कफवातशामक
पिप्पली	कटु	लघु, स्निग्ध, तीक्ष्ण	उष्ण	मधुर	कफवातशामक
गजपिप्पली	कटु	लघु, रुक्ष	उष्ण	कटु	कफवातशामक
सर्जिका	कटु	लघु, स्निग्ध, सूक्ष्म, तीक्ष्ण	उष्ण	कटु	वातकफशामक
मरिच	कटु	लघु, तीक्ष्ण	उष्ण	कटु	कफवातशामक
कुष्ठ	तिक्त, कटु	लघु, रुक्ष, तीक्ष्ण	उष्ण	कटु	कफवातशामक
शुण्ठी	कटु	लघु, स्निग्ध	उष्ण	मधुर	कफवातशामक
सौर्वचल	लवण	स्निग्ध, लघु, सूक्ष्म	उष्ण	कटु	वातहर, ना–अतिपित्तलम्
बिड	लवण	लघु, तीक्ष्ण, रुक्ष, व्यवायी	उष्ण	कटु	कफ वातानुलोमक
यवानी	कटु	लघु, रुक्ष, तीक्ष्ण	उष्ण	कटु	कफवातशामक
पुष्कराज	तिक्त, कटु	लघु, तीक्ष्ण	उष्ण	कटु	कफवातशामक
अजाजी	कटु	लघु, रुक्ष	उष्ण	कटु	कफवातशामक
मधुकं	मधुर	गुरु, स्निग्ध	शीत	मधुर	वातपित्तशामक
शतपुष्पा	कटु, तिक्त	लघु, रुक्ष, तीक्ष्ण	उष्ण	कटु	कफवातशामक
एरण्ड तैल	मधुर	स्निग्ध, तीक्ष्ण, सूक्ष्म	उष्ण	मधुर	कफवातशामक
शतपुष्पा अम्बु	कटु, तिक्त	लघु, तीक्ष्ण	उष्ण	कटु	कफवातशामक
कांजी	अम्ल	तीक्ष्ण, लघु	उष्ण	कटु	वातकफशामक
मस्तु	अम्ल, कषाय, मधुर	लघु	उष्ण	कटु	वातकफशामक

क्षारवस्ति - *सैन्धवाक्षं समादाय शताह्वाक्षं तथैव च।*
गोमूत्रस्य फलान्यष्टावम्लिकायाः पलद्वयम्।।
गुडस्य द्वे पले चैव सर्वमालोडय यत्नतः।
वस्त्रपूतं सुखोष्णश्च बस्तिं दद्याद्विचक्षणः।। चक्रदत्त 73।29–30

1. सैन्धव – १ कर्ष – 1 तोले – 10 ग्राम
2. शताह्वा – १ कर्ष – 1 तोले – 10 ग्राम
3. इमली – 2 पल – 8 तोले – 80 ग्राम
4. गुड – 2 पल – 8 तोले – 80 ग्राम
5. गोमूत्र – 8 पल – 32 तोले – 320 मि.ली.

द्रव्य	रस	गुण	वीर्य	विपाक	प्रभाव
सैन्धव *Rock salt*	लवण	लघु, रुक्ष, सूक्ष्म	उष्ण	कटु	त्रिदोषशामक, हृद्य, अग्निदीपक, नेत्ररोग में लाभदायक
शतपुष्पा *Dill seeds* *(Anethum graveolens)*	कटु, तिक्त	लघु, तीक्ष्ण	उष्ण	कटु	ज्वरहर, आक्षेपहर, दीपनपाचन, कफवातहर
गोमूत्र *Cow's urine*	कटु, तिक्त, कषाय	उष्ण, लघु, तीक्ष्ण	उष्ण	कटु	अग्निदीपक, कफवातनाशक
इमली *Tamarind* *(Tamarindus indicum)*	अम्ल	गुरु, रुक्ष	उष्ण	अम्ल	त्रिदोषशामक, अग्निदीपक, सारक, कफवातनाशक
गुड़ *Trecle, Jaggery* *(Saccharum officinarum)*	मधुर	लघु, स्निग्ध, सर	उष्ण	मधुर	वातपित्तनाशक, वृष्य, बलवर्धक

वृहत सैन्धवादि तैल में प्रयुक्त अधिकतर द्रव्य कटृ, तिक्त, कषाय रस, उष्ण वीर्य, कटु विपाक एवं कफवातशामक है। तथा क्षारबस्ति में प्रयुक्त द्रव्य आम और वात दोष के विरुद्ध गुण वाले है। सभी प्रयुक्त द्रव्य कफवातशामक, उष्णवीर्यात्मक तथा अग्निदीपक होने से आम का पाचन और वायु का शमन करते है। बस्ति का तीक्ष्ण गुण होना आमवात के स्त्रोतसदुष्टि प्रकार संग में लाभदायक है। गोमूत्र अग्निदीपक, वातशामक तथा विरेचन का कार्य करता है। इसी कारण क्षारवस्ति बस्ति के आमवात व्याधि में अच्छे परिणाम दर्शाती है।

साधनसामग्री एवं शोध पद्धति :

आमवात के रोगियों पर वृहत सैन्धवादि तेल की जानु वस्ति एवं क्षारवस्ति का चिकित्सकीय अध्ययन हेतु विशेष शोध पद्धति को अपनाया गया।

रोगी चयन–

1. आमवात के ऐसे रोगी जिनकी उम्र 20 वर्ष से उपर एवं 60 वर्ष से कम है उनको ही इस शोधकार्य में शामिल किया गया।
2. इस शोध कार्य हेतु आमवात के रोगियों का चयन एवं पंजीयन एक निश्चित प्रारुप तैयार कर किया गया। जिसमें रोगी के संबंध में समस्त जानकारी जैसे उम्र, लिंग, धर्म, जाति, व्यवसाय, वैवाहिक स्थिति, शैक्षणिक स्थिति, सामाजिक आर्थिक स्तर, रोगी का पता, व्याधि के संबंध में निदान, पूर्वरुप एवं लक्षण इत्यादि की जानकारी एकत्रित कर अध्ययन किया गया।
3. आमवात के अलावा अन्य घातक व्याधि/उपद्रव जैसे मधुमेह, उच्चरक्तचाप, शोष तथा अन्य उपद्रव हो ऐसे किसी रोगी का चयन इस अध्ययन हेतु नहीं किया गया।
4. अध्ययन हेतु रोगियों का चयन चिकित्सालय शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, जबलपुर, मध्यप्रदेश एवं शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय एवं चिकित्सालय, निपनिया, रीवा, म0प्र0 के कायचिकित्सा–पंचकर्म विभाग में पंजीकृत रोगियों पर किया गया।
5. रोगी चयन का आधार – आमवात के लक्षणों जैसे संधिगत तथा सार्वदैहिक लक्षण के आधार पर किया गया। **विशेषतः जानु संधि विकृति** से पीड़ित रोगियों का चयन इस अध्ययन हेतु किया गया।

   संधिगत – संधिशूल, संधिशोथ, संधिराग, संधिस्तंभ, संचारी वेदना, संधि उष्णस्पर्शत्व, संधिकार्य हानि।

   सार्वदेहिक – ज्वर, शिरःशूल, निद्रानाश, कण्डू, दाह, स्तेमित्व, बहुमूत्रता, भ्रम, हृदग्रह, अंगग्रह, गौरव, आलस्य, मुखप्रसेक, अरुचि, तृष्णा, क्षुधानाश, छर्दि, आन्त्रकूजन, विबंध, कुक्षिशूल, आनाह।

सहायक आधार (Criteria for the Diagnosis of Rheumatoid Arthritis)

* Early morning stiffness > 1 hour
* Arthritis of three or more joints
* Arthritis of hand joints
* Symmetrical arthritis
* A positive serum Rheumatoid Factor (R.A. Test)
* Typical Radiological changes

Diagnosis of Rheumatoid Arthritis made with 4 or more criteria.

रोगी संख्या :

आमवात के कुल 90 रोगियों का चयन चिकित्सकीय अध्ययन हेतु किया गया।

चिकित्सा समूह :

आमवात के रोगियों को समूह 'क' समूह 'ख' एवं समूह 'ग' में विभाजित कर अध्ययन किया गया। प्रत्येक समूह में 30–30 रोगियों का चयन किया गया, जिन्हें 45 दिनों तक चिकित्सा निम्नानुसार दी गई।

- **समूह क –** वृहत सैन्धवादि तेल की जानुवस्ति का प्रयोग
- **समूह ख –** क्षार वस्ति का प्रयोग
- **समूह ग –** वृहत सैन्धवादि तेल की जानुवस्ति एवं क्षार वस्ति का सम्मिलित प्रयोग

परीक्षण :

चिकित्सा के दौरान नियमित रक्त की जांच जैसे Hb%, ESR, TLC, DLC, RA factor के साथ–साथ रोगी के Urine Test - Routine and Microscopic की जांच कराई गयी। रोगियों का सम्पूर्ण चिकित्सकीय परीक्षण तथा आयुर्वेदोक्त त्रिविध, षडविध, अष्टविध एवं दशविध परीक्षाओं से अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणामों को यथाक्रम रुग्णपत्रक पर चिकित्सापूर्व (B.T.) तथा चिकित्सापश्चात (A.T.) में अंकित किया गया।

चिकित्सकीय प्रभाव का आकलन :

चिकित्सा लाभ का आकलन हेतु रोगियों के संधिगत लक्षणों को शून्य से तीन तक स्कोर उनकी तीव्रता और मंदता के लिये तथा सार्वदेहिक लक्षण को शून्य से दो तक अंकीकरण किया गया तत्पश्चात चिकित्सा के प्रभाव का आकलन इसी अंकीकरण प्रक्रिया के आधार पर निर्धारित किया गया। इसके अतिरिक्त Functional assessment तथा रक्त

संबंधी परीक्षा जैसे HB%, TLC, DLC, ESR, R.A. factor का भी आकलन चिकित्सा पूर्व एवं चिकित्सा पश्चात करवाया गया तथा चिकित्सकीय प्रभाव का आकलन किया गया।

रोगी चयन लक्षण समुच्चय :

संधिगत – (तीव्र –3, मध्यम –2, अल्प–1, लक्षण अभाव–0)

1. संधिशूल
2. संधिशोथ
3. संधिराग
4. संधिस्तंभ
5. संचारी वेदना
6. संधि उष्णस्पर्शत्व
7. संधिकार्य हानि

सार्वदेहिक – (उपस्थित –2, अल्प उपशय –1, पूर्ण उपशय –0) ज्वर, शिरःशूल, निद्रानाश, कण्डू, दाह, स्तेमित्व, बहुमूत्रता, भ्रम, हृदग्रह, अंगग्रह, गौरव, आलस्य, मुखप्रसेक, अरुचि, तृष्णा, क्षुधानाश, छर्दि, आन्त्रकूजन, विबंध, कुक्षिशूल, आनाह

Functional Assessment –

1. Walking Time – Time taken to walk a distance of 25 feet
   - 0 : 15-20 sec.
   - 1 : 21-30 sec.
   - 2 : 31-40 sec
   - 3 : > 40 sec.
2. Grip strength – ability to compress an inflated ordinary sphygmomanometer cuff
   - 0 : 200mmHg or more
   - 1 : 199-120 mmHg
   - 2 : 119-70 mmHg
   - 3 : under 70 mmHg
3. Foot pressure – ability of patients to press a weighing machine
   - 0 : 25 -21 kg
   - 1 : 20 -16 kg
   - 2 : 15 -10 kg
   - 3 : < 10 kg
4. General functional capacity
   - 0 : Complete ability to carry on all routine duties
   - 1 : Adequate normal activity despite slight difficulty in joint movement

2 : Few activities are persisting but patient can take care of himself

3 : Few activities are persisting and patient requires an attendant to take care of himself.

4 : Patients are totally bed ridden

चिकित्सा के सम्पूर्ण प्रभाव का अध्ययन :

1. यदि 25% से कम लाभ, लक्षणों एवं अन्य परीक्षणों में पाया हैं तो कोई लाभ नहीं।
2. यदि 25% से अधिक एवं 50% से कम लाभ को अल्प लाभ की श्रेणी में रखा गया।
3. 50% से अधिक एवं 75% से कम लाभ यदि लक्षणों एवं परीक्षणों में मिलता है तो इसे मध्यम लाभ की श्रेणी में रखा गया।
4. 75% से अधिक एवं 99% से कम लाभ को उत्तम लाभ की श्रेणी में रखा गया।
5. लक्षणों एवं परीक्षणों में 100% लाभ मिलता है तो सम्पूर्ण लाभ की श्रेणी में रखा गया।

चिकित्सात्मक अध्ययन :

इस चिकित्सात्मक अध्ययन के अंतर्गत आयु, लिंग, वैवाहिक अवस्था, जाति, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति, शैक्षणिक स्थिति, अग्नि, कोष्ठ, दोषप्रकृति, मानस प्रकृति, आहार, व्याधिकाल, दोष दुष्टि, धातु दुष्टि एवं स्त्रोतस दुष्टि इनके अनुसार रोगियों का अध्ययन किया गया। साथ ही आमवात के कारण, पूर्वरुप, लक्षण एवं प्रकारों को तालिकाबद्ध करके प्राप्त परिणामों का अध्ययन किया गया।

आमवात के संधिगत लक्षणों में उपशय प्रतिशत दर्शक तालिका

संधिगत लक्षण	समूह क			समूह ख			समूह ग		
	Mean Score		Relief %	Mean Score		Relief %	Mean Score		Relief %
	BT	AT		BT	AT		BT	AT	
संधिशूल	2.63	1.53	41.82	2.50	1.03	58.80	2.40	0.90	62.50
संधिशोथ	2.36	1.29	45.33	2.26	1.04	53.98	2.18	0.75	65.59
संधिराग	2.17	1.33	38.24	2.09	1.00	52.15	2.07	0.70	66.18
संधिस्तंभ	2.54	1.50	40.94	2.15	1.04	51.62	2.32	0.64	72.41
संचारी वेदना	2.68	1.59	40.67	2.15	0.85	60.93	2.26	0.85	62.38
संधि उष्णस्पर्शत्व	2.32	1.28	44.82	2.17	1.09	50.23	2.29	0.79	65.50

संधिकार्यहानि	2.46	1.54	37.39	1.95	1.00	48.71	2.31	0.73	68.39

आमवात के अन्य सार्वदेहिक लक्षणों में उपशय प्रतिशत दर्शक तालिका

सार्वदेहिक लक्षण	समूह क			समूह ख			समूह ग		
	Mean Score		Relief	Mean Score		Relief	Mean Score		Relief
	BT	AT	%	BT	AT	%	BT	AT	%
ज्वर	2.00	1.25	37.50	2.00	0.93	53.50	2.00	0.58	71.00
शिरःशूल	2.00	1.33	33.50	2.00	1.00	50.00	2.00	0.70	65.00
निद्रानाश	2.00	1.58	21.00	2.00	1.11	44.50	2.00	0.84	58.00
कण्डू	2.00	1.33	33.50	2.00	1.29	35.5	2.00	0.50	75.00
दाह	2.00	1.11	44.50	2.00	0.88	56.00	2.00	0.86	57.00
स्तेमित्व	2.00	1.33	33.50	2.00	1.00	50.00	2.00	0.80	60.00
बहुमूत्रता	2.00	1.14	43.00	2.00	1.06	47.00	2.00	0.74	63.00
भ्रम	2.00	1.43	28.50	2.00	0.86	57.00	2.00	0.62	69.00
हृदग्रह	2.00	1.17	41.50	2.00	1.14	43.00	2.00	0.67	66.50
अंगग्रह	2.00	1.27	36.50	2.00	1.05	47.50	2.00	0.83	58.50
गौरव	2.00	1.25	37.50	2.00	1.18	41.00	2.00	0.94	53.00
आलस्य	2.00	1.21	39.50	2.00	1.00	50.00	2.00	0.85	57.5
मुखप्रसेक	2.00	1.33	33.50	2.00	1.40	30.00	2.00	0.80	60.00
अरुचि	2.00	1.18	41.00	2.00	1.05	47.50	2.00	0.83	58.50
तृष्णा	2.00	1.13	43.50	2.00	0.93	53.50	2.00	0.83	58.50
क्षुधानाश	2.00	1.12	44.00	2.00	0.86	57.00	2.00	0.67	66.50
छर्दि	2.00	1.14	43.00	2.00	1.20	40.00	2.00	1.00	50.00
आन्त्रकूजन	2.00	1.29	35.50	2.00	1.17	41.50	2.00	0.83	58.50
विबंध	2.00	1.52	24.00	2.00	0.88	56.00	2.00	0.78	61.00
कुक्षिशूल	2.00	1.10	45.00	2.00	0.75	62.50	2.00	0.50	75.00
आनाह	2.00	1.26	37.00	2.00	0.96	52.00	2.00	0.77	61.50
शूनतांग	2.00	1.11	44.50	2.00	0.88	56.00	2.00	0.71	64.50

सांख्यिकी विश्लेषण :

आमवात के लक्षणों का चिकित्सापूर्व तथा चिकित्सा पश्चात परीक्षण किया गया। इन लक्षणों में चिकित्सापूर्व और चिकित्सा पश्चात प्राप्त परिणामों को सांख्यिकी रुप में Student 't' test के माध्यम से तालिकाबद्ध कर विश्लेषण प्रस्तुत किया गया।

Functional Assessment – Walking Time, Grip strength, Foot pressure & General functional capacity

इसके अतिरिक्त रक्त संबंधी परीक्षा जैसे HB%, TLC, DLC, ESR, RA Factor भी चिकित्सा पूर्व एवं चिकित्सा पश्चात करवाया गया तथा चिकित्सकीय प्रभाव का आंकलन किया गया।

आमवात के संधिगत लक्षणों का सांख्यिकी विश्लेषण एवं उपशय प्रतिशत

समूह क									
लक्षण	'n'	Mean		Mean Diff.	Relief %	SD	SE	't'	P
		BT	AT						
संधिशूल	30	2.63	1.53	1.10	41.82	0.31	0.06	7.18	<0.001
संधिशोथ	28	2.36	1.29	1.07	45.33	0.52	0.10	6.92	<0.001
संधिराग	24	2.17	1.33	0.83	38.24	0.56	0.12	5.50	<0.001
संधिस्तंभ	28	2.54	1.50	1.04	40.94	0.19	0.04	7.62	<0.001
संचारी वेदना	22	2.68	1.59	1.09	40.67	0.43	0.09	6.25	<0.001
संधि उष्णस्पर्शत्व	25	2.32	1.28	1.04	44.82	0.35	0.07	6.28	<0.001
संधिकार्य हानि	24	2.46	1.54	0.92	37.39	0.28	0.06	5.40	<0.001
समूह ख									
संधिशूल	30	2.50	1.03	1.47	58.80	0.51	0.09	10.66	<0.001
संधिशोथ	27	2.26	1.04	1.22	53.98	0.58	0.11	8.06	<0.001
संधिराग	22	2.09	1.00	1.09	52.15	0.68	0.15	6.31	<0.001
संधिस्तंभ	27	2.15	1.04	1.11	51.62	0.32	0.06	7.77	<0.001
संचारी वेदना	26	2.15	0.85	1.31	60.93	0.68	0.13	8.14	<0.001
संधि उष्णस्पर्शत्व	23	2.17	1.09	1.09	50.23	0.42	0.09	6.75	<0.001
संधिकार्य हानि	22	1.95	1.00	0.95	48.71	0.49	0.10	5.70	<0.001

समूह ग									
संधिशूल	30	2.40	0.90	1.50	62.50	0.51	0.09	12.83	<0.001
संधिशोथ	28	2.18	0.75	1.43	65.59	0.50	0.10	10.75	<0.001
संधिराग	27	2.07	0.70	1.37	66.18	0.56	0.11	9.89	<0.001
संधिस्तंभ	28	2.32	0.64	1.68	72.41	0.48	0.09	10.18	<0.001
संचारी वेदना	27	2.26	0.85	1.41	62.38	0.50	0.10	11.46	<0.001
संधि उष्णस्पर्शत्व	24	2.29	0.79	1.50	65.50	0.51	0.10	10.67	<0.001
संधिकार्य हानि	26	2.31	0.73	1.58	68.39	0.50	0.10	9.31	<0.001

आमवात के अन्य सार्वदैहिक लक्षणों का सांख्यिकी विश्लेषण

समूह क									
सार्वदेहिक लक्षण	'n'	Mean		Mean Diff.	Relief %	SD	SE	't'	P
		BT	AT						
ज्वर	12	2.00	1.25	0.75	37.50	0.75	0.22	3.45	<0.01
शिरःशूल	06	2.00	1.33	0.67	33.50	0.82	0.33	2.00	<0.01
निद्रानाश	19	2.00	1.58	0.42	21.00	0.69	0.16	2.65	<0.01
कण्डू	03	2.00	1.33	0.67	33.50	0.58	0.33	2.00	>0.05
छाह	09	2.00	1.11	0.89	44.50	0.33	0.11	8.00	<0.001
स्तेमित्व	12	2.00	1.33	0.67	33.50	0.49	0.14	4.69	<0.001
बहुमूत्रता	21	2.00	1.14	0.86	43.00	0.57	0.13	6.85	<0.001
भ्रम	07	2.00	1.43	0.57	28.50	0.53	0.20	2.83	<0.01
हृदग्रह	06	2.00	1.17	0.83	41.50	0.41	0.17	5.00	<0.01
अंगग्रह	22	2.00	1.27	0.73	36.50	0.46	0.10	7.48	<0.001
गौरव	20	2.00	1.25	0.75	37.50	0.44	0.10	7.55	<0.001
आलस्य	19	2.00	1.21	0.79	39.50	0.42	0.10	8.22	<0.001
मुखप्रसेक	06	2.00	1.33	0.67	33.50	0.52	0.21	3.16	<0.01
अरुचि	17	2.00	1.18	0.82	41.00	0.39	0.10	8.64	<0.001
तृष्णा	15	2.00	1.13	0.87	43.50	0.52	0.13	6.50	<0.001
क्षुधानाश	17	2.00	1.12	0.88	44.00	0.49	0.12	7.50	<0.001

छर्दि	07	2.00	1.14	0.86	43.00	0.38	0.14	6.00	<0.001
आन्त्रकूजन	07	2.00	1.29	0.71	35.50	0.49	0.18	3.87	<0.01
विबंध	23	2.00	1.52	0.48	24.00	0.51	0.11	4.49	<0.001
कुक्षिशूल	10	2.00	1.10	0.90	45.00	0.32	0.10	9.00	<0.001
आनाह	23	2.00	1.26	0.74	37.00	0.54	0.11	6.55	<0.001
शूनतांग	09	2.00	1.11	0.89	44.50	0.60	0.20	4.44	<0.001
समूह ख									
ज्वर	14	2.00	0.93	1.07	53.50	0.47	0.13	8.45	<0.001
शिरःशूल	09	2.00	1.00	1.00	50.00	0.50	0.17	6.00	<0.001
निद्रानाश	18	2.00	1.11	0.89	44.50	0.58	0.14	6.47	<0.001
कण्डू	07	2.00	1.29	0.71	35.5	0.49	0.18	3.87	<0.001
छाह	08	2.00	0.88	1.12	56.00	0.35	0.12	9.200	<0.001
स्तेमित्व	11	2.00	1.00	1.00	50.00	0	0	0.00	<0.001
बहुमूत्रता	18	2.00	1.06	0.94	47.00	0.64	0.15	6.27	<0.001
भ्रम	07	2.00	0.86	1.14	57.00	0.38	0.14	8.00	<0.001
हृदग्रह	07	2.00	1.14	0.86	43.00	0.38	0.14	6.00	<0.001
अंगग्रह	19	2.00	1.05	0.95	47.50	0.52	0.12	7.88	<0.001
गौरव	17	2.00	1.18	0.82	41.00	0.39	0.10	8.64	<0.001
आलस्य	19	2.00	1.00	1.00	50.00	0.53	0.14	9.25	<0.001
मुखप्रसेक	05	2.00	1.40	0.60	30.00	0.55	0.24	2.44	<0.01
अरुचि	20	2.00	1.05	0.95	47.50	0.51	0.11	8.32	<0.001
तृष्णा	14	2.00	0.93	1.07	53.50	0.27	0.07	15.00	<0.001
क्षुधानाश	14	2.00	0.86	1.14	57.00	0.36	0.10	11.78	<0.001
छर्दि	05	2.00	1.20	0.80	40.00	0.45	0.20	4.00	<0.01
आन्त्रकूजन	06	2.00	1.17	0.83	41.50	0.41	0.17	5.00	<0.01
विबंध	25	2.00	0.88	1.12	56.00	0.44	0.09	12.74	<0.001
कुक्षिशूल	08	2.00	0.75	1.25	62.50	0.46	0.16	7.64	<0.001
आनाह	24	2.00	0.96	1.04	52.00	0.55	0.11	9.28	<0.001
शूनतांग	08	2.00	0.88	1.12	56.00	0.35	0.12	9.00	<0.001

समूह ग									
ज्वर	12	2.00	0.58	1.42	71.00	0.51	0.15	9.53	<0.001
शिरःशूल	10	2.00	0.70	1.30	65.00	0.48	0.15	8.51	<0.001
निद्रानाश	19	2.00	0.84	1.16	58.00	0.69	0.16	7.33	<0.001
कण्डू	06	2.00	0.50	1.50	75.00	0.55	0.22	6.71	<0.001
छाह	07	2.00	0.86	1.14	57.00	0.38	0.14	8.00	<0.001
स्तेमित्व	10	2.00	0.80	1.20	60.00	0.42	0.13	9.00	<0.001
बहुमूत्रता	19	2.00	0.74	1.26	63.00	0.45	0.10	12.17	<0.001
भ्रम	08	2.00	0.62	1.38	69.00	0.52	0.18	7.51	<0.001
हृदग्रह	06	2.00	0.67	1.33	66.50	0.52	0.21	6.32	<0.001
अंगग्रह	18	2.00	0.83	1.17	58.50	0.38	0.09	12.91	<0.001
गौरव	16	2.00	0.94	1.06	53.00	0.44	0.11	9.60	<0.001
आलस्य	20	2.00	0.85	1.15	57.5	0.49	0.11	10.51	<0.001
मुखप्रसेक	05	2.00	0.80	1.20	60.00	0.45	0.20	6.00	<0.001
अरुचि	18	2.00	0.83	1.17	58.50	0.38	0.09	12.91	<0.001
तृष्णा	12	2.00	0.83	1.17	58.50	0.39	0.11	10.38	<0.001
क्षुधानाश	18	2.00	0.67	1.33	66.50	0.49	0.11	11.66	<0.001
छर्दि	04	2.00	1.00	1.00	50.00	0	0	0	<0.001
आन्त्रकूजन	06	2.00	0.83	1.17	58.50	0.41	0.17	7.00	<0.001
विबंध	23	2.00	0.78	1.22	61.00	0.42	0.09	13.84	<0.001
कुक्षिशूल	08	2.00	0.50	1.50	75.00	0.53	0.19	7.94	<0.001
आनाह	22	2.00	0.77	1.23	61.50	0.43	0.09	13.42	<0.001
शूनतांग	07	2.00	0.71	1.29	64.50	0.49	0.18	6.97	<0.001

आमवात के रोगियों में Functional Assessment का सांख्यिकी विश्लेषण

समूह क								
Functional Assessment	Mean		Mean Diff.	Relief %	SD	SE	't'	P
	BT	AT						
Walking Time	36.80	23.50	13.30	36.14	4.59	0.84	12.56	<0.001

Grip strength	10.13	12.13	-2.00	19.94	1.58	0.29	2.64	<0.01
Foot pressure	72.53	101.13	-28.6	39.43	12.04	2.20	8.39	<0.001
Functional capacity	2.03	1.17	0.87	42.85	0.68	0.12	5.84	<0.001
समूह ख								
Walking Time	40.60	24.00	16.60	40.88	4.26	0.78	14.64	<0.001
Grip strength	12.13	17.57	-5.43	44.76	1.81	0.33	11.54	<0.001
Foot pressure	97.20	138.23	-41.03	42.21	17.16	3.13	11.69	<0.001
Functional capacity	1.97	0.93	1.03	52.28	0.49	0.09	7.91	<0.001
समूह ग								
Walking Time	38.30	18.20	20.10	52.48	4.01	0.73	22.72	<0.001
Grip strength	11.93	19.33	-7.40	62.02	2.71	0.50	14.90	<0.001
Foot pressure	94.23	149.20	-54.97	58.33	15.30	2.79	18.29	<0.001
Functional capacity	2.07	0.83	1.23	59.42	0.57	0.10	9.09	<0.001

आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में रक्त परीक्षा दर्शक तालिका

Parameters	समूह	Mean		Mean Diff.	Relief %	SD	SE	't'	P
		BT	AT						
RA Factor	क	1.00	0.82	0.18	18.00	0.39	0.08	2.16	<0.05
	ख	1.00	0.76	0.24	24.00	0.44	0.10	2.50	<0.05
	ग	1.00	0.67	0.33	33.00	0.48	0.10	3.39	<0.001
Hb%	क	12.91	13.45	-0.54	4.18	0.43	0.08	1.64	>0.05
	ख	12.57	13.10	-0.53	4.21	0.36	0.07	1.60	>0.05
	ग	13.21	13.72	-0.52	3.93	0.43	0.08	1.67	>0.05
ESR	क	14.00	8.87	5.13	36.64	2.86	0.52	5.13	<0.001
	ख	15.20	9.50	5.70	37.50	2.90	0.53	5.43	<0.001
	ग	15.87	8.77	7.10	44.73	3.65	0.67	6.82	<0.001

TLC	क	7113	6970	143	2.01	99.7	18.22	0.92	>0.05
	ख	7020	6905	115	1.63	52.7	9.63	0.68	>0.05
	ग	7083	6967	116	1.63	71.1	12.98	0.73	>0.05
Neutrophil	क	58.10	63.67	-5.57	9.58	2.79	0.51	5.27	<0.001
	ख	57.67	62.60	-4.93	8.54	2.63	0.48	4.60	<0.001
	ग	58.87	63.23	-4.37	7.42	2.58	0.47	4.17	<0.001
Lymphocyte	क	34.93	29.23	5.57	15.94	3.02	0.55	5.76	<0.001
	ख	35.33	30.23	5.10	14.43	3.09	0.56	5.05	<0.001
	ग	34.53	29.80	4.73	13.69	2.90	0.53	4.61	<0.001
Eosinophil	क	4.40	5.23	-0.83	18.86	1.02	0.19	3.53	<0.001
	ख	4.43	5.30	-0.87	19.63	1.01	0.18	3.78	<0.001
	ग	4.13	5.23	-1.10	26.63	1.03	0.19	4.16	<0.001
Monocyte	क	2.57	1.87	0.70	27.23	0.53	0.10	3.99	<0.001
	ख	2.47	1.77	0.70	28.34	0.60	0.11	4.32	<0.001
	ग	2.47	1.63	0.83	33.60	0.53	0.10	5.19	<0.001

आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में चिकित्सा के सम्पूर्ण प्रभाव का अध्ययन

लाभ	समूह क		समूह ख		समूह ग	
	रोगी संख्या	प्रतिशत	रोगी संख्या	प्रतिशत	रोगी संख्या	प्रतिशत
सम्पूर्ण लाभ	0	0	02	6.67	02	6.67
उत्तम लाभ	0	0	02	6.67	05	16.67
मध्यम लाभ	03	10	11	36.66	23	76.66
अल्प लाभ	27	90	15	50	0	0
कोई लाभ नहीं	0	0	0	0	0	0
कुल	30	100	30	100	30	100

निष्कर्ष :

आमवात के रोगियों पर वृहत सैन्धवादि तैल की जानुबस्ति एवं क्षारवस्ति का चिकित्सकीय अध्ययन – इस शोध कार्य के लिए आमवात के पीड़ित 90 रोगियों का चिकित्सात्मक अध्ययन 45 दिन तक किया गया। परिक्षा परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष है –

- ❖ सबसे अधिक रोगी 23 (35.56%), 31–40 वर्ष आयु समूह में पाये गये तथा 31–50 वर्ष की आयु समूह के 61.12% रोगी पाये गये।
- ❖ स्त्री रोगियों की संख्या पुरुष रोगियों की तुलना मे अधिक पायी गयी।
- ❖ अधिकतर चयनित सभी रोगी तरुणावस्था और प्रौढ़ावस्था के होने के कारण अधिकतर रोगी विवाहित पाये गये।
- ❖ हिन्दू धर्म के सर्वाधिक 51 (56.56 %), मुस्लिम धर्म के 19 (21.11%), बौध्द धर्म के 17 (18.89%) तथा 03(3.33%) रोगी इसाई धर्म का पाया गया।
- ❖ 41 (45.56%) रोगी गृहणी, 31 (34.44%) रोगी नौकरी, 08 (8.89%) रोगी मजदूरी, 01 (1.11%) रोगी विद्यार्थी तथा 09 (10.0%) रोगी अन्य व्यवसाय करने वाले पाये गये।
- ❖ 32 (35.55%) रोगी निम्न आयवर्ग, 41 (45.56%) रोगी मध्यम आयवर्ग के और 17 (18.89%) रोगी उच्च आयवर्ग के पाये गये।
- ❖ 71 (78.89%) रोगी शिक्षित पाये गये और 19 (21.11%) रोगी अशिक्षित पाये गये।
- ❖ 68 (75.56%) रोगी मिश्र आहार लेने वाले और 22 (24.44%) रोगी निरामिष आहार लेने वाले पाये गये।
- ❖ 55 (61.11%) रोगी मन्दाग्नि के और 33 (36.67%) रोगी विषमाग्नि के पाये गये। तीक्ष्णाग्नि के केवल 02 (2.22%) रोगी इस अध्ययन में पाये गये।
- ❖ मृदु कोष्ठ के 21 (23.33%) रोगी, मध्यम कोष्ठ के 54 (60%) रोगी तथा क्रूर कोष्ठ के 15 (16.67%) रोगी पाये गये।
- ❖ वातपित्तज प्रकृति के 20 (22.22%)ए वातकफज प्रकृति के 43 (47.78%) तथा कफपित्तज प्रकृति के 27 (30%द्ध रोगी पाये गये।
- ❖ राजसिक प्रकृति के 36 (40%) तथा तामसिक प्रकृति के 54 (60%) रोगी पाये गये।

- 27 (30%) रोगियों में कुलवृत्त उपस्थित और 63 (70%) रोगियों में कुलवृत्त अनुपस्थित पाया गया।
- १ से ६ माह से आमवात व्याधि से पीड़ित 18 (20%) रोगी, ६ से १२ माह व्याधिकाल वाले 36 (40%) रोगी तथा १२ से १८ माह व्याधिकाल वाले 63 (40%) रोगी पाये गये।
- वातानुबंध 43 (47.78%), पित्तानुबंध 17 (18.89%) तथा कफानुबंध 30 (33.33%) रोगी पाये गये।
- वात कफ दुष्टि के 54 (60%), वातपित्त दुष्टि के 11 (12.22%), पित्त कफ दुष्टि के 19 (21.11%) तथा त्रिदोष दुष्टि के 06 (6.67%) रोगी पाये गये।
- मांस एवं मज्जा धातु दुष्टि क्रमशः 79 (87.78%) एवं 86 (95.56%) तथा मेद एवं रक्त धातु दुष्टि क्रमशः 38 (42.22%) एवं 07 (7.78%) रोगियों में पायी गयी।
- अन्नवह स्त्रोतस दुष्टि, रसवह स्त्रोतस दुष्टि तथा अस्थिवह एवं मज्जावह स्त्रोतस दुष्टि सर्वाधिक रोगियों में पायी गयी।
- 69 (76.67%) अकाल भोजन, सर्वाधिक 73 (81.11%) अहित भोजन, 12 (13.33%) विरुद्ध आहार, 60 (66.67%) अति गुरु, स्निग्ध, शीतद्रव सेवन, 30 (33.33%) अति रुक्ष भोजन, 41 (45.56%) दीवास्वाप, रात्रीजागरण, 22 (24.22%) अतिश्रम, व्यायाम, 34 (37.78%) शोक, चिन्ता, भय, क्रोध तथा 45 (50%) निश्चलत्व यह व्याधि निदान पाया गया।
- संधिशूल सभी 90 (100%) रोगियों में पाया गया। संधिशोथ 83 (92.22%) रोगियों में, संधिराग 73 (81.11%) में, संधिस्तंभ 83 (92.22%) में, संचारी वेदना 75 (83.33%) में, संधि उष्णस्पर्शत्व तथा संधिकार्य हानि 72 (80%) रोगियों में यह लक्षण पाये गये।
- विबंध सर्वाधिक 78.89% रोगियों में पाया गया। 42.22% में ज्वर, 27.78% में शिरःशूल, 62.22% में निद्रानाश, 17.78% में कण्डू, 26.67% में दाह, 36.67% में स्तेमित्व, 64.44% में बहुमूत्रता, 24.44% में भ्रम, 21.11% में हृदग्रह एवं आन्त्रकूजन, 65.56% में अंगग्रह, 58.89% में गौरव, 64.44% में आलस्य, 17.78% में मुखप्रसेक

एवं छर्दि, 61.11% में अरुचि, 45.56% में तृष्णा, 54.44% में क्षुधानाश, 28.89% में कुक्षिशूल, 76.67% में आनाह तथा 26.67% में शूनतांग यह लक्षण पाये गये।

- 90 (100%) रोगियों में जानुसंधि, 53 (58.89%) रोगियों में कर्पूर संधि, 64 (71.11%) रोगियों में गुल्फसंधि, 67 (74.44%) में मणिबंध संधि, 26 (28.89%) में अंससंधि, 17 (18.89%) में त्रिकसंधि, 39 (43.33%) में हस्तांगुलीपर्व संधि तथा 18 (20%) रोगियों में पादांगुलीपर्व संधिग्रस्तता पायी गयी। अधिकतर रोगियों में संधिग्रस्तता बड़े संधियों में पायी गयी।
- 21 (23.33%) रोगियों में Rheumatoid Nodule उपस्थित और 69 (76.67%) रोगियों में अनुपस्थित पाया गया।
- 06 (6.67%) रोगियों में Flexion contractures, 08 (8.89%) रोगियों में Swan neck, 05 (5.56%) रोगियों में Ankylosis, 03 (3.33%) रोगियों में Ulnar deviation, 01 (1.11%) रोगियों में Valgus deformity दिखाई दी। 63 (70%) रोगियों में किसी भी प्रकार की संधिगत deformity नहीं पायी गयी।
- 67 (74.44%) रोगियों में Rheumatoid Factor उपस्थित (Positive) और 23 (25.56%) रोगियों में अनुपस्थित (Negative) पाया गया।
- सम्यक् बस्ति के लक्षणों में प्रसृष्ट विट्कता यह लक्षण सर्वाधिक 39 (43.33%) रोगियों में पाया गया। 26 (28.89%) रोगियों में प्रसृष्ट मूत्रता, 35 (38.89%) में प्रसृष्ट वातता, 36 (40%) में आशय लाघ्वता, 44 (48.89%) में रोगोपशमन, 18 (20%) में प्रकृतिस्थता तथा 44 (48.89%) में अग्नि तीक्ष्णता यह लक्षण पाये गये। इस चिकित्सकीय अध्ययन में प्रयुक्त क्षार बस्ति का प्रभाव समुह ख और समूह ग के रोगियों में अच्छा प्रदर्शित होता है।
- समूह 'क' में संधिशूल में 41.82%, संधिशोथ में 45.33%, संधिराग में 38.24%, संधिस्तंभ में 40.94%, संचारी वेदना में 40.67%, संधि उष्णस्पर्शत्व में 44.82% तथा संधिकार्य हानि में 37.39% उपशय प्राप्त हुआ। समूह 'ख' में संधिशूल में 58.80%, संधिशोथ में 53.98%, संधिराग में 52.15%, संधिस्तंभ में 51.62%, संचारी वेदना में 60.93%, संधि उष्णस्पर्शत्व में 50.23% तथा संधिकार्य हानि में 48.71% उपशय प्राप्त हुआ। समूह 'ग' में संधिशूल में 62.50%, संधिशोथ में

65.59%, संधिराग में 66.18%, संधिस्तंभ में 72.41%, संचारी वेदना में 62.38%, संधि उष्णस्पर्शत्व में 65.50% तथा संधिकार्य हानि में 68.39% उपशय प्राप्त हुआ। तीनों समूहों में आमवात के संधिगत लक्षणों में उपशय प्राप्त हुआ। समूह ग में अन्य दोनों समूह क और समूह ख की अपेक्षाकृत अच्छे परिणाम प्राप्त हुए।

- ❖ समूह 'क' में ज्वर में 37.50%, शिरःशूल में 33.50%, निद्रानाश में 21%, कण्डू में 33.50%, दाह में 44.50%, स्तेमित्व में 33.50%, बहुमूत्रता में 43%, भ्रम में 28.50%, हृदग्रह में 41.50%, अंगग्रह में 36.50%, गौरव में 37.50%, आलस्य में 39.50%, मुखप्रसेक में 33.50%, अरुचि में 41%, तृष्णा में 43.50%, क्षुधानाश में 44%, छर्दि में 43%, आन्त्रकूजन में 35.50%, विबंध में 24%, कुक्षिशूल में 45%, आनाह में 37%, शूनतांग में 44.50% उपशय प्राप्त हुआ।
- ❖ समूह 'ख' में ज्वर में 53.50%, शिरःशूल में 50%, निद्रानाश में 44.50%, कण्डू में 35.50%, दाह में 56%, स्तेमित्व में 50%, बहुमूत्रता में 47%, भ्रम में 57%, हृदग्रह में 43%, अंगग्रह में 47.50%, गौरव में 41%, आलस्य में 50%, मुखप्रसेक में 30%, अरुचि में 47.50%, तृष्णा में 53.50%, क्षुधानाश में 57%, छर्दि में 40%, आन्त्रकूजन में 41.50%, विबंध में 56%, कुक्षिशूल में 62.50%, आनाह में 52%, शूनतांग में 56% उपशय मिला।
- ❖ समूह 'ग' में ज्वर में 71%, शिरःशूल में 65%, निद्रानाश में 58%, कण्डू में 75%, दाह में 57%, स्तेमित्व में 60%, बहुमूत्रता में 63%, भ्रम में 69%, हृदग्रह में 66. 50%, अंगग्रह में 58.50%, गौरव में 53%, आलस्य में 57.50%, मुखप्रसेक में 60%, अरुचि में 58.50%, तृष्णा में 58.50%, क्षुधानाश में 66.50%, छर्दि में 50%, आन्त्रकूजन में 58.50%, विबंध में 61%, कुक्षिशूल में 75%, आनाह में 61.50%, शूनतांग में 64.50% उपशय प्राप्त हुआ।
- ❖ समूह 'क' में कण्डू लक्षण में $P<0.05$, ज्वर, शिरःशूल, निद्रानाश, भ्रम, हृदग्रह, मुखप्रसेक तथा आन्त्रकूजन में $P<0.01$ एवं अन्य सभी लक्षणों में $P<0.001$ महत्वपूर्ण ऱ्हास प्राप्त हुआ। समूह 'ख' में मुखप्रसेक, छर्दि तथा आन्त्रकूजन में $P<0.01$ एवं अन्य सभी लक्षणों में $P<0.001$ महत्वपूर्ण ऱ्हास प्राप्त हुआ। समूह 'ग' में सभी लक्षणों में $P<0.001$ महत्वपूर्ण ऱ्हास प्राप्त हुआ।

- ❖ Walking time, Grip strength, Foot pressure एवं General functional capacity में तीनों ही समूहों में महत्वपूर्ण ऱ्हास (Significant) प्राप्त हुआ।
- ❖ समूह 'क' में Walking time में 36.14%, Grip strength में 19.94%, Foot pressure में 39.43% एवं General functional capacity में 42.85% उपशय प्राप्त हुआ। समूह 'ख' में Walking time में 40.88%, Grip strength में 44.76%, Foot pressure में 42.21% एवं General functional capacity में 52.28% उपशय प्राप्त हुआ। समूह 'ग' में Walking time में 52.48%, Grip strength में 62.02%, Foot pressure में 58.33% एवं General functional capacity में 59.42% उपशय प्राप्त हुआ।
- ❖ RA Factor चिकित्सापूर्व समूह क, समूह ख और समूह ग में क्रमशः 22, 21 एवं 24 रोगियों में Positive पाया गया। चिकित्सा पश्चात समूह क में 18%, समूह ख में 24% तथा समूह ग में 33% रोगियों में RA Factor Negative पाया गया। सभी समूहों में RA Factor में महत्वपूर्ण ऱ्हास दिखाई दिया। तीनों समूहों में Hb% में आधे ग्रॉम की वृद्धि प्राप्त हुई। ESR परीक्षा में तीनों समूहों में महत्वपूर्ण ऱ्हास दिखाई दिया। TLC value तीनों समूहों में कम हुई पर सांख्यिकीय दुष्टिकोण से P>0.05 (Not significant) दिखाई दिया। Neutrophil और Eosinophil में वृद्धि तथा Lymphocyte और Monocyte value में कमी प्राप्त हुई, सांख्यिकीय दुष्टिकोण से तीनों समूहों में परिणाम Significant रहा।
- ❖ समूह 'क' में मध्यम लाभ 03 (10%) एवं अल्प लाभ 27 (90%) रोगियों में प्राप्त हुआ। समूह 'ख' में सम्पूर्ण लाभ 02 (6.67%), उत्तम लाभ 02 (6.67%), मध्यम लाभ 11 (36.66%) तथा अल्प लाभ 15 (50%) रोगियों में प्राप्त हुआ। समूह 'ग' में सम्पूर्ण लाभ 02 (6.67%), उत्तम लाभ 05 (16.67%) तथा मध्यम लाभ 23 (76.66%) रोगियों में प्राप्त हुआ।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुये किये गये अध्ययन से यह प्रतीत होता है कि वृहत सैन्धवादि तैल जानुवस्ति एवं क्षारवस्ति का प्रभाव आमवात में प्रदर्शित होता है। यह पंचकर्म चिकित्सा दोनों बाहय (जानुवस्ति) एवं आभ्यंतर (क्षारवस्ति) रुप में आमवात में लाभदायक है, साथ ही सम्मिलित रुप से प्रयोग करने पर अत्याधिक लाभदायक है। इस चिकित्सापरक अध्ययन के प्रयोग में औषधि के दुष्प्रभाव, पंचकर्म व्यापत् रोगियों में न के

बराबर पाये गये। यद्यपि यह अध्ययन अल्प काल में किया गया और प्राप्त परिणामों के दृष्टिकोण से एक सफल स्वरुप दर्शाती है परन्तु किसी अधिक ठोस परिणाम पर पहुँचने के लिए और अधिक प्रयोग की आवश्यकता प्रतीत होती है और ऐसा प्रतीत होता है कि यदि दीर्घ काल तक इसका अध्ययन कर परिणाम सामने लाये जाय तो यह प्रयोग अधिक सफलतम सिद्ध हो सकता है।